IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कबीर के काव्य में जीवन उपदेश

प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभागप्रमुख,
श्री मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय,शंकरनगर
तह- बिलोली, जि.- नांदेड

आज पूरा विश्व भय से आतंकित है, यह भय सामाजिक ,राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अधिक पैमाने पर फैला हुआ है। परिणामस्वरुप लोगों में धार्मिक संघर्ष होते आ रहे हैं। हिंदुओं और मुसलमानो में व्याप्त दोषो को उजागर करने का महान कार्य कबीरदास ने किया है । जो सामाजिक और धार्मिक झगड़े हो रहे हैं उसके बुनियादी कारण क्या है ? धर्म के ठेकेदार तो धार्मिक उन्माद ही चाहते हैं । परंतु दुख की यह बात है कि, 600 साल पहले कही हुई सर्वधर्म समभाव की बात आज भी हम आचरण में नहीं लाए ।

"पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ,पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का ,पढे सो पंडित होय।

अनेक साखियों एवं दोहों के माध्यम से इस जगत का रास्ता पथप्रदर्शित करने वाले प्रमुख संतों में कबीरदास का नाम लिया जाता है। कुछ ऐसे विरले संत हुए जिनका कार्य समाज के लिए ही समर्पित रहा है । जिसमें मध्ययुगीन संत कबीर का नाम प्रथम आता है । कबीरदास ने जिस साहित्य की रचना की है, उनका उद्देश्य केवल मनोरंजन करना ही नहीं है बल्कि उन्होंने जीवन के वैषम्य को अनुभूत किया था। यही कारण रहा है कि, उनकी काव्य रचना समाज में व्याप्त कुरीतियों को समूल नष्ट करना चाहती है ।

कबीर का काव्य बौद्धिकता की कसौटी पर खरा उतरता है । सच्चाई सामने लाकर बोलने में हिम्मत लगती है । ऐसे ही हिम्मत वाले कबीरदास थे। कबीरदास समाज में ढोंगी एवं बाह्यचारों की आलोचना करके अज्ञानी लोगों में जागृति का कार्य करते हैं । साथ ही कबीरदास के काव्य में हजारों पोथिया पढ़कर भी जो प्रेम से व्यवहार नहीं कर पाता ऐसे आडंबर की आड में धोखा देने वाले पंडितों का पर्दाफाश हुआ है । 21वीं सदी में कबीरदास की हमारे समाज को आवश्यकता है । चारों और अराजक तथा सामाजिक विषमता के खिलाफ शंखनाद करने में कबीर के विचार आज भी प्रासंगिक है । "कबीर ने निरंतर इस बात पर बल दिया है कि, व्यक्ति को सामाजिक स्तर पर सहज जीवन व्यतीत करते हुए व्यापक मानवीय मूल्यों के आधार पर अपने साधना मार्ग पर अग्रसर होना है"।1 कबीर ने सामान्य जनों को एक रास्ता दिखाया जो मोह, माया से मुक्त था । अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए

जिन्होंने उच्च - नीच ,जात-पात की दीवारें खड़ी कर ली थी। कबीर ने उन्हें आडे हाथ लेकर उनके शोषण वृत्ति का पर्दाफाश किया है। यही कारण रहा होगा कि ,कबीर मनुष्यता को श्रेष्ठ मानते हैं। अपितु कबीरदास जी का विचार है कि, समय के साथ केवल बाहरी बदलाव से ही शांति स्थापित नहीं होती बल्कि आंतरिक बदलाव से ही शांति ,भाईचारा स्थापित होगा। ज्ञान से ही व्यक्ति के विचारों की कक्षा का विस्तार होता है ,जैसे-जैसे ज्ञान के साधन उपलब्ध हुए वैसे-वैसे ही व्यक्ति के बौद्धिक स्तर के अनुसार वैचारिकता के विविध आयाम उभरे हैं।जैसे

'जो यह एक न जानिए बहु जाने क्या होय।
एकै ते सब होत है ,सब ते एक न होय।'

एक का जो महत्व जानता है ,उसे अनेक होने का महत्व अज्ञात रहता है अर्थात वैचारिक परिपक्वता के लिए एक में ही नहीं अपितु बहू स्त्रोतों का विचार जानना भी आवश्यक है।एकता और अनेकता यह परस्पर पूरक है। इसलिए कबीर कहते हैं की,

'एकै साधै सब साधे सब जाय।
माली सींचे मूल को फूलै फूलै अघाय'

बगीचे का माली पेड़ पौधों को पानी देता है, उसी पानी से फल - फूल को आकार मिलता है। उसे सुंदर बनाने में कई स्त्रोतों का योगदान रहता है।विचारों की परिपक्वता कई स्त्रोतों पर निर्भर करती है। जीवन साधना में वैचारिक दृढ़ता के बिना सफल हो पाना कठिन होता है। इसलिए आवश्यक है कि ,साधना संग्राम में कूद पड़े तभी अपने लक्ष्य को पाना संभव है।जैसे,

'सूर चढ़े संग्राम को, पांव न पीछा देह
सर के साटै जुझई, अगम ठौर कूं लेह।'2

युद्धभूमि से भाग कर जाना शौर्य नही कहलाता। बल्कि जीवन में एक ऊंचाई हासिल करने के लिए संग्राम में कूदना पड़ता है, युद्ध से भाग कर जाने वाला कायर कहलाता है बल्कि युद्ध में स्वयं के प्राण भी देने पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए।घाव किए जाएंगे फिर भी अनेक प्रकार के घावों को झेलना पडेगा। संघर्ष अनेक प्रकार के होते हैं, आमतौर पर वैचारिक संघर्ष विचारों पर आधारित होते हैं। विचारों के आदान-प्रदान से ही व्यक्ति के विकास में सहायता होती है। कबीर का काव्य भी समन्वय की विराट चेष्टा है। कबीरदास इसीलिए स्त्री पुरुष दोनों को भी बराबरी का उपदेश करते आए हैं। कबीरदास के काव्य में कनक और कामिनी के अत्यधिक संग से जो दुष्परिणाम होते हैं उनसे परिचित कराने का कार्य हुआ है। कनक और कामिनी के अत्यधिक संगत से अनिष्ट परिणाम होते हैं और यह परिणाम समान रूप से स्त्री और पुरुष दोनों को भी भोगने पड़ते हैं। कनक और कामिनी के संग से किसी का भला तो होता ही नहीं पर व्यक्ति, परिवार एवं समाज को दुष्प्रभाव झेलने पड़ते हैं। इसलिए कबीर ने स्त्री और पुरुष दोनों को भी बराबरी का उपदेश करते हुए कहा है कि,

'जो कबहू के देखिये, बीर बहिन के भाय
आठ पहर अलगा रहे, ताको काल ना खाय'

कुछ दोहों में कबीर के स्त्री विरोधी विचार भी व्यक्त होते हैं परंतु उनकी दृष्टि स्त्री और पुरुष दोनों पर भी समान रूप से रही है। जो स्त्री भाई - बहन का रिश्ता निभाने में स्वंय अपने विचारों का पथ प्रदर्शित करते हैं किसी भी प्रकार के कुसंग का प्रभाव नहीं होने देते उनका गुणगान कबीर करते हैं। जैसे

'कपास बिनुठा कापड़ा, कदे सुरंग न होय

कबीर त्यागो ज्ञान करी ,कनक कामिनी दोय'

कपास से वस्त्र बनते हैं परंतु कपास अपना मान सम्मान भूल कर धागों से वस्त्र के रूप में इतना आपस में घुलमिल जाता है कि ,उनमें एक छोटा सा भी सुरंग शेष नहीं रहता। तात्पर्य यह है कि छोटा बड़ा भेद मानने से ही वाद होते हैं परंतु ज्ञान से सारे भेद टूट जाते हैं। कनक और कामिनी के ज्ञान के संगम से दूसरों का भी जीवन पथप्रदर्शित होता है।कामिनी के विचार व्यक्ति का हित नहीं करते बल्कि ज्ञान से विश्व का कल्याण होता है अधिक से अधिक ज्ञानी से ज्ञान प्राप्त करके कनक और कामिनी पूजनीय बन जाते हैं। नारी अपने ज्ञान एवं कम से भला और बुरा भी करती है। जैसे -

"नारी नरक न जानिए, सब संतन की खान

जामे हरिजन उपजे, सोई रतन की खान"3

नारी केवल नरक जाने का ही द्वार नहीं है बल्कि नारी के प्रभाव से नर का नारायण भी बन जाता है। खदानों में अमूल्य रत्न सुप्तावस्था में पड़े रहते हैं परंतु उस पर अच्छे कुशल करागिरी की दृष्टि पड़ती है तो उसमें से साधारण आत्मा का उदय होता है। इसलिए नारी के पथप्रदर्शित रूप से समाज का भला होता है तो कामीनी रूप व्यक्ति विकास में बाधक भी है। कबीरदास स्त्री के समन्वित रूप का गुणगान गाते हैं। साथ ही धर्म में सत्य और आचरण सीख भी देते हैं। आज के दौर में धर्म की आड़ में बाह्यडंबर और धोखे ही हो रहे हैं। धर्म के उपदेशों का अवमान ही किया जा रहा है। साधु ,महात्मा , स्वंय घोषित पथगामी बन रहे हैं। उन्हें दुनिया का कोई ज्ञान नहीं है, वह अपने ही स्वार्थवश काम में लगे हुए है। धर्मग्रंथो के उपदेश, वचनों के द्वारा अज्ञानी जनों को अपने वागजाल में फंसा रहे हैं। ढोंगी बनकर स्वंय के चरणों की पूजा भी करवाते हैं। ऐसे ढोंगी संत,औरों को भी अंधेरे में डूबा कर जीवन का रास्ता कलुषित कर रहे हैं। ऐसे समय में कबीरदास धर्म के सत्य आचरण का उपदेश करते है। नाचना , गाना और पद प्राप्त करना ही जीवन का उद्देश्य नही है। इससे किसी की भलाई भी नहीं होती। जैसे

नाचे गावे पद कहे, नाहीं गुरु सो हित।

कहै कबीर क्यों निपटे, बीज बिहुना खेत।

कबीरदास जी कहते हैं कि, खेती में अच्छी फसल लाने के लिए बीज का अच्छा होना आवश्यक होता है। उसी प्रकार आदर्श और सत्य की स्थापना के लिए आचरण की शुद्धता आवश्यक है। कबीर इसी रास्ते पर चलने का आग्रह करते हैं। जैसे,

"नर नारायण होत है, जो करि बुझे कोय।

किट भिरंगी होत है, गुरु बलिहारी तोय"4

कहां जाता है कि ,अच्छे कर्मों से बुरा व्यक्ति भी पूजनीय बन जाता है। जिस काम को हम चुनते हैं, उस काम से हमारी पहचान बनती है। गुरु के कहने से बलिदान देने पर नर से नारायण भी बन जाने में देरी नहीं लगती। कबीरदास धर्म में सत्य पर ही जोर देते हैं ,दिखावे की वृत्ति से मनुष्य दुखी हो जाता है। जैसी स्थिति वैसी गति को स्वीकारने से ही मनुष्य की उन्नति हो सकती है। मनुष्य की बुद्धी चंचल है ,इसी चंचलता के कारण सदियों से मनुष्य सुखी नहीं हो रहा है। जो उसके पास है उससे भी अधिक की चाह है। यह जीव कई जन्मों से सुख की आशा में भटक रहा है पर अभी तक कहीं पर भी सुख मिला नहीं है। जीव की इच्छाओं के कारण ही दुख का आना स्वाभाविक है। यह इच्छाएँ कभी पूर्ण नहीं होती। एक पूरी हुई तो तुरंत दूसरी इच्छा का जन्म होता है। इसलिए कबीर ने जैसी स्थिति वैसी गति को स्वीकारना ही सुखी जीवन का मंत्र बताया है। जैसे,

'संपत्ति देखी न हरषिये, विपत्ति देखी मत रोय।
संपत्ति है तहां विपत्ति है, करता करै सो होए'।

अधिक धन भी कभी-कभी धोखा देने में कारणीभूत होता है। संपत्ति आने पर अधिक आनंद की प्राप्ति होना स्वाभाविक है परंतु विपत्ति आने पर रोना और विलाप करने वाले भी अत्यधिक पाए जाते हैं, ऐसी स्थिति में दृढ़ से कार्य करना चाहिए। यह ध्यान में रखना चाहिए कि ,जहां पर धन है वहां दुख भी होता है। कबीर कहते हैं कि , जैसे,

" भूप दुखी अवधूत दुखी, दुखी रंक का विपरीत।
कहे कबीर ये सब दुखी, सुखी संत मनजीत।"5

राजा और रंक एक दूसरे के विपरीत होते हैं, सुखी कौन है ? कबीर कहते हैं कि, सभी जीवों में मनुष्य ही ऐसा है जिसके पास जीने के सभी साधन होकर भी वह दुखी है। इस दुख के कारण भी भिन्न-भिन्न है। जो स्थाई नहीं है उसके पीछे लगने से मनुष्य के दुख बढ़ते ही गए हैं। डॉ. रामचंद्र तिवारी के अनुसार , "कबीर मध्ययुगीन सांस्कृतिक स्रोतों के संश्लेष मात्र नहीं, इन स्रोतों के सकारात्मक मनुष्य धर्मि तत्वों के आधार पर एक सच्चे मानव धर्म के संस्थापक संत है। कबीर ने अपने विचार आचार से एक ऐसी संस्कृति को जन्म दिया है जो चिर नूतन है"6 मोह - माया से ग्रस्त मनुष्य का मन चंचल की राह में कार्य करता है और निराशा आने पर दुखी होता है। आमतौर पर हम देखते हैं कि ,संत सुखी है इसका एक ही कारण है कि, संतो के जीवन में आचरण का समन्वित रूप मिलता है। संत अपने जीवन में महत्वाकांक्षाओं पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। कम साधनों से जीवन का उपभोग लेने की कला उन्होंने प्राप्त की है। जैसे,

"हरि दरबारी साधु है ,ईन ते सब कुछ होय।
बेगी मिलावे राम को ,इन्हें मिले जू कोय"7

संतों की यह विशेषता पाई जाती है कि, यह जो भी क्रिया साधना करते हैं उसमें दूसरों का सुख निहित रहता है। उनकी भक्ति और शक्ति में लोकोपयोगी, लोकहितेषी की भावना

विद्यमान रहती है। इन्हे जो भी कुछ मिलता है वह राम के चरणों में समर्पित करते हैं। कबीरदास सच्चे साधु की पहचान निम्न रूप से करते हैं, जैसे

'साधु ऐसा चाहिए, जाके ज्ञान विवेक।
बाहर मिलते सो मिले ,अंतर सबसो एक।'

जिसमें ज्ञान और विवेक का समन्वय रहता है उनके व्यक्तित्व में बाहरी और आंतरिक एकात्मता भरी रहती है। अच्छे साधु की पहचान यही है,जो छोटे-बड़ो के साथ समानता का व्यवहार करते हैं। साधु वही है जो ज्ञान के भंडार से युक्त ,विवेक की कसौटी पर जिनका कार्य प्रत्यक्ष कृति में उतरता है। सच्चे साधु की पहचान करते हुए कबीरदास निम्न रूप से कहते हैं कि, जैसे

"कामी क्रोधी लालची,ईस्तेमाल भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा ,जाति बरन कुल खोय।"8

काम, क्रोध और लालच यह मनुष्य के जीवन में सबसे बड़े शत्रु होते हैं।यह दुर्गुण जिनके हृदय में है , वह भगवान की भक्ति तो कर ही नहीं सकते परंतु समाज के विकास में भी बाधक बनते है। सजधज कर निकलने वाला भक्त अपनी जाति कुल के लिए कलंक होता है। केवल बाहरी दिखावे से ही भक्ति नहीं की जाती बल्कि आंतरिक विचारों की शुद्धता भी आवश्यक है। काम, क्रोध और लालची लोगों का कोई भरोसा नहीं करता। इसलिए जीवन में इन सब दुर्गुणों का त्याग करना आवश्यक है। गुरु और शिष्य एक दूसरे के परस्पर पूरक होते हैं। गुरु से ही शिष्य के जीवन को नया रास्ता मिलता है। कबीरदास गुरु और शिष्य को भी समन्वित संदेश देते हैं। कबीरदास धर्म और जाति को महत्व नहीं देते उनकी दृष्टि से मनुष्य के जीवन का कर्म ही श्रेष्ठ है। कबीरदास व्यक्ति के गुण से व्यक्ति की पहचान के पक्षधर है। जैसे

'कहता हूं कहीं जात हूं ,देता हूं हेला।
गुरु की करनी गुरु जाने ,चेला की चेला।'

गुरु और शिष्य यह भिन्न स्तर के दो व्यक्ति है। इनको आपसी समन्वय से ही आगे बढ़ना होता है। गुरु से प्राप्त ज्ञान की वृद्धि में सहायता करना ही शिष्य का परम कर्तव्य माना जाता है। अतः गुरु का महत्व गुरु के स्थान पर है तो शिष्य का अपने स्थान पर। जैसे

''गुरु नाम है गम्य का ,शीश सीख ले साय।
बिनु पद बिनु मरजाद नर, गुरु शिष नहीं कोय''9

गुरु ने जो स्थान प्राप्त किया है कड़ी मेहनत और तपस्या की साधना का हीं फल है । अच्छा काम करने के लिए पद की आवश्यकता नहीं होती बल्कि जीवन में अनुभव से छोटा भी उपदेश भी कर सकता है। गुरु और शिष्य सुविधाओं के अभाव में जो साधना में लिन रहकर दूसरों को ज्ञान का रास्ता दिखाते हैं, वह गुरु वंदनीय स्थान प्राप्त करते हैं। अगर लोभी और लालची है और दोनों भी एक दूसरे पर दांव खेलने लगे तो संसार में गुरु और शिष्य का रिश्ता समाप्त होने में देर नहीं लगेगी। जैसे,

"गुरु लोभी शीष लालची ,दोनों खेल दांव ।
दोनों बूडे बापू,रे चाढी पाथर की नांव।"10

कबीरदास ने गुरु से जो शिक्षा प्राप्त की है उनके अनुभव से लोभी और लालची यह दोनों भी जीवन का नाश करने में कारणीभूत रहते हैं। जैसे पानी से निकलते बुदबुदा को अहंकार चढ जाता है, उसका जीवन क्षणभंगुर ही रहता है ।कबीरदास जी संदेश देते हैं कि, नश्वर और इस क्षणभंगुर के जीवन में किसी भी प्रकार का अहंकार नहीं करना चाहिए । "व्यक्ति के मानवीय संस्कारों में परिवर्तन कर धरती पर स्वर्ग का स्वप्न देखते रहे। यही इनकी प्रेरणा थी और इसी में उनकी महानता निहित है"11 गुरु और शिष्य में किसी भी प्रकार की द्वेष ,ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए ।इस प्रकार कबीरदास के दोहे हमें जीवन शिक्षा देते रहने वाले हैं।

निष्कर्ष ÷

उन संतों का ही काव्य और साहित्य पथप्रदर्शक माना जाता है जिसमें व्यापक समाज हित का प्रयोजन होता है। इस दृष्टि से कबीर का साहित्य सामाजिक और धार्मिक समन्वय स्थापित करते हुए समाज की बुराइयों पर प्रहार करता है ।अनादि कालो से चली आ रही संकीर्ण मानसिकताओं और क्षुद्र मनोवृत्ति का परिचय देकर उसकी जड़ों को समूल उच्चाटन करना चाहती है । इस दृष्टि से देखा जाए तो कबीरदास ने तत्कालीन समाज में जो देखा,झेला उसका वर्णन तो किया ही परंतु ढोंगी और झूठी प्रथाओं पर तिखे प्रहार भी किए हैं । कबीर का इसलिए विशेष महत्व है कि, "उन्होंने जहां भक्ति की व्यापक साधना पद्धति में मानवीय मूल्यों की भूमिका को स्वीकार किया है वहां उस समय के सामाजिक जीवन की मूल्यहीन मान्यताओं का डटकर विरोध किया।"12 कबीरदास ने जो बुरा है उसे फटकार लगाते हुए , दिखावे की वृति का विरोध तो किया ही है साथ ही लोगों को सत्य से अवगत कराने का महान कार्य भी किया है। इन्हीं कारणो से कबीर व्यक्ति के सद्गुणों का पुरस्कार करते ही है तो साथ ही धर्म ,समाज, जाति, राजनीति जैसे क्षेत्र में जो अराजक की स्थिति है उसका डटकर विरोध भी करते हैं । कबीरदास अपने आराध्य राम को सगुण और निर्गुण इस दोनों रूपों में पूजनीय मानते हैं ।उनके दोहों के माध्यम से राम रहीम की एकता का प्रतिपादन, मनुष्य की पहचान, गृहधर्म के प्रति कर्तव्य की स्थापना , धर्म के प्रति कार्य का पालन ,स्त्री- पुरुष समानता, व्यापक लोकहित,लोकधर्म की स्थापना का संदेश देते हैं। कबीर अपने समय के बहुत बड़े समाज सुधारक रहे हैं ।उनके विचारों की प्रासंगिकता आज भी है, उनका संदेश मानव जाति के कल्याण एवं समाजहित के लिए आज भी पथ प्रदर्शित कर रहा है ।

संदर्भ सूची ÷

1. डॉ रघुवंश कबीर - एक नई दृष्टि पृष्ठ-117
2.लाल चंद्र दोहन जिज्ञासु - कबीर वाणी अमृत संदेश पृष्ट 51
3.लाल चंद्र दोहन जिज्ञासु - कबीर वाणी अमृत संदेश पृष्ठ 148 149
4.लाल चंद्र दोहन जिज्ञासु - कबीर वाणी अमृत संदेश पृष्ट 182 186
5. डॉ रामचंद्र तिवारी- कबीर और भारतीय संत साहित्य पृष्ठ- 28

6.लाल चंद्र दोहन जिज्ञासु - कबीर वाणी अमृत संदेश पृष्ठ 237 238

7.महंत देवकीनंदन दास - कबीर दोहावली पृष्ठ 41

8.महंत देवकीनंदन दास - कबीर दोहावली पृष्ठ 61

10.महंत देवकीनंदन दास - कबीर दोहावली पृष्ठ 31

11 .रविंद्रकुमार सिंह - संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता पृष्ठ- 62

12 .डॉ.जयदेव सिंह, डॉ वासुदेव सिंह कबीर वांग्मय खंड पृष्ठ- 196

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation